विश्व शांति के महानायक थे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

जीवन के प्रत्येक क्षण और संकल्पों में केवल विश्व शांति की ही वेदना और परमात्मा से प्रार्थना रहती थी। मनुष्य संसार में सबसे सर्वश्रेष्ठ और महान है, फिर भी आसुरीयता का राक्षस ऐसा घर कर बैठा है कि मानवीयता और सौहार्द्र बीते समय की बात हो गयी है। इसी उधेड़ बुन में इस सृष्टि पर एक ऐसे महापुरूष के संकल्प थे जिनका नाम था प्रजापिता ब्रह्मा। उनका मकसद सर्व मनुष्यात्माओं को एक ऐसे सूत्र में बांधना था जिससे मानवता की डोर ऐसी मजबूत बने जहाँ पर कलंकित करने वाले कर्मों के लिए कोई स्थान न हो। ऐसा तो उन्हें बचपन से ही था परन्तु जब वे साठ साल की आयु में पहुंचे तब तात्कालिक विश्व की हालत देख उन्हें बहुत पीड़ा होती थी। प्रतिदिन घंटों पूजा पाठ, सर्व मनुष्यात्माओं की सुख शांति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करना उनकी आदतों में शुमार हो गया था। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा अच्छी तरह जानते थे कि जब तक मनुष्य इसकी शुरूआत स्वयं से नहीं करेगा तब तक इस लक्ष्य को पाना कठिन नहीं बल्कि असम्भव है। इसलिए इस क्रम का शुभारम्भ उन्होंने स्वयं से करना प्रारम्भ किया और एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने की योजना बनायी जिससे पूरे विश्व के लोग उनसे प्रेरणा प्राप्त कर इस मार्ग पर चलकर मुकाम को हासिल कर सके।

सन् १८७६ में हैदराबाद सिन्ध के एक धर्मपरायण परिवार में जन्में दादा लेखराज बचपन से ही पूरी मानवता के कल्याण के लिए चिन्तित रहते थे। कई बार तो उन्हें दूसरों के कष्ट को देखकर इतनी पीड़ा होती थी कि उसके लिए वे घंटों ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे। धीरे-धीरे वे बड़े हुए और अपने माधुर्य स्वभाव तथा ईमानदारी के बल पर सुप्रसिद्ध होते गये। हीरे जवाहरात के व्यापार ने उन्हें वैश्वि स्तर पर सुप्रसिद्ध कर दिया। उन्होंने ईश्वर को प्राप्त करने के लिए कई गुरू किये फिर भी उन्हें आत्मसंतुष्टि नहीं मिलती। साठ वर्ष की आयु में दादा लेखराज एक दिन जब अपने मित्र के घर वाराणसी गये थे। तब उन्हें रात्रि में ईश्वरीय शक्ति का साक्षात्कार हुआ। वे इस बात को समझ नहीं पाये कि ये क्या हो रहा है। जब उन्होंने अपने गुरूओं से इसके बारे में बात की तो वे भी इससे अनजान थे। तब बाबा समझ गये कि यह ईश्वरीय शक्ति की ही कमाल है। इस घटना से उनके मन में उधेड़ बुन चल ही रहा था कि पुनः परमात्मा ने उन्हें नयी दुनियां की स्थापना तथा पुरानी दुनिया के विनाश का साक्षात्कार कराया तथा उन्हें नयी दुनिया की स्थापना का राज समझाया। यह देखकर बाबा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। परमात्मा शिव ने स्वयं अपना परिचय दिया तथा दादा लेखराज से नाम बदलकर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के नाम से सुशोभित किया। बाबा को अभी भी उन्हें यह नहीं समझ में आया कि इस आसुरी दुनिया में नयी दुनिया की स्थापना कैसे होगी। तब परमात्मा ने उनके अन्दर प्रवेश होकर स्वयं अपना परिचय दिया कि तुम्ही विश्व महाराजन श्री नारायण हो और अब यह तुम्हारा चौरासीवां जन्म है। जिससे तुम्हारा यह भौतिक रथ अब ईश्वरीय निर्देशन में नयी संसार बनाने का निमित्त बनेगा। इसके बाद विश्व परिवर्तन की कारवां का शुभारम्भ हुआ। बाबा ने सन् १९३७ में अपनी सारी चल अचल सम्पत्ति अपने धीरे-धीरे परमात्मा शिव ने उनके तन का आधार लेकर सतयुग की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया।

इस अभिनव कार्य के लिए परमात्मा के आदेशानुसार ओम मंडली की स्थापना हुई। जिसमें थोड़े से लोग आकर ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करते तथा अपने को देवता तुल्य बनाने का प्रयास करते। इस महान कार्य का प्रारम्भ तो हो गया परन्तु दैवी समाज की परिकल्पना अर्थ हो रहे कार्यों में अनेक आसुरी वृत्तियों वाले लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु ईश्वरीय शक्ति सदैव ही आसुरी शक्तियों पर भारी पड़ी और कारवां बढ़ता रहा। भारत पाकिस्तान बंटवारे के बाद ओम मंडली नामक यह संस्था ईश्वरीय निर्देशानुसार सन् १९५० में राजस्थान के माउण्ट आबू में आयी। यही से प्रारम्भ हुआ नयी दुनिया बनाने का आगाज।

बाबा अच्छी तरह जानते थे कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति को शांति और सुख के सम्बन्धों का रहस्य नहीं मालूम होगा तब तक इस मार्ग पर चलकर इसकी स्थापना में सहयोगी बनना कठिन है। इसके लिए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा को सभी मनुष्यात्माओं तक पहुंचाने का प्रयास प्रारम्भ किया। उसके लिए माताओं-बहनों नामक टस्ट की स्थापना की। क्योंकि बाबा को मालूम था कि इस कारवां में माताओं बहनों की भूमिका मुख्य है। यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते त्रत्र देवता का भाव जागृत कराकर माताओं बहनों का सम्मान करते हुए इस महान सेवा के बागडोर के प्रतिनिधित्व का दायित्व सौपा। बाबा ने माताओं बहनों को उस समय विशाल सेवा का दायित्व दिया जब समाज में महिलाओं के अधिकारों की चर्चा तक नहीं होती थी। यह अपने आप में एक समाजिक दृष्टिकोण से लोगों में कौतूहल का विषय रहा। इसके लिए समाज में तरह-तरह की चर्चायें प्रारम्भ हुई परन्तु उनके सारे संशयों को दूर करते हुए एक मिशाल पेश की।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की अग्नि को तेज करते हुए गहन तपस्या से से स्व-शान्ति से विश्व शांति की अलख जगाते रहे। बाबा के जीवन में इस तरह का महान परिवर्तन लोगों के जीवन परिवर्तन का आधार बना। अरावली के शिखर से प्रारम्भ हुआ यह शंखनाद धीरे-धीरे शहरों गॉवों तक फैलने लगा। बाबा ने गहन तपस्या कर स्वयं को सम्पूर्णता प्राप्ति की ओर बढ़ते रहे। माताओं बहनों को मायावी और आसुरी वैभवों से अप्रभावित होने वाले शिक्षाओं से सजाकर मजबूत बनाते रहे। श्वेत वस्त्रों में लिपटी ये बहनें नारी नहीं बल्कि शक्ति के रूप में विख्यात होने लगी तथा लोगों के जीवन में परिवर्तन कराने की निमित्त बनी। बाबा ने अपनी गहन त्याग और तपस्या से सम्पूर्णता को प्राप्त कर फरिश्ता बन गये। बाबा की यह स्थिति इतनी उच्च हो गयी कि वे सम्पूर्णत की उच्च पराकाष्ठा को प्राप्त कर १८ जनवरी, १९६९ को अपने नश्वर शरीर का त्याग कर सूक्ष्मवतनवासी हो गये। चूंकि इस रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ के रचयिता तथा पालनहार स्वयं परमात्मा शिव है। इसलिए यह कारवां बढ़ता ही रहा। आज बाबा हमारे बीच में नहीं है बल्कि सूक्ष्म रूप मे उनकी उपस्थिति आज भी लाखों-करोड़ों लोगों को प्रेरणा प्रदान कर रही है तथा उन्हें ईश्वरीय निर्देशन में स्वयं भाग्य बनाने का अवसर और शक्ति प्रदान कर रही है।

दुनिया के पालनहार तथा सर्व आत्माओं के परमपिता-परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के निर्देशन में शांति, सुख और नये समाज की स्थापना का पैगाम आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व के १३७ देशों तक फैल चुका है। इसमें लाखों लोग सम्मिलित होकर अपने जीवन को दिव्य बनाते हुए मानवता के श्रेष्ठ संस्कारों को धारण कर देवतायी सीढ़ी पर अग्रसर है। वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी है। त्याग और तपस्या की मूर्ति दादी जानकी ९५ वर्ष की उम्र में भी लाखों दिलों की जवां है। जिनके निर्देशन में २६ हजार युवा बहनें अपने जीवन को समर्पित कर दुनिया बदलने की मुहिम में शामिल है।

बाबा के ४२ वें पुण्य तिथि पर हम सभी संकल्प करते हैं कि श्रेष्ठ समाज की स्थापना अर्थ उन्होंने जो मानवता का बीजा उसे साकार करके ही छोड़ेगें। ऐसी महान एवं पावन पर्व पर भारत नहीं पूरी दुनियां में विश्व शांति एवं सदभावना के लिए हजारों कार्यक्रम आयोजित कर प्रार्थना सभायें आयोजित की जायेगी। उस महान विभूति को शत शत नमन करते हैं।